श्री यशोपिक्यभ्र श्रेन ग्रंथभाजा होन : ०२७८-२४२५३२२ ३००४८४६

याजना अंकनो वधारो

विद्यावल्लभ-इतिहासतत्त्वमहोदधि आचार्य श्रीमद्विजयेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजे थोडा वखत पहेला लखेला "अशोकना शिलालेखो उपर दृष्टिपात" नामना पुस्तक संबंधी केटलाक प्रसिद्ध पेपरो अने मासिकोमां प्रगट थएलां अने तद्विषयज्ञ विद्वानोनां—

केटलाक अभिप्रायो

प्रगटे कुत्तो_{यः} श्री यशोविजय जैन यंथमाळा भावनगर



इतिहास ए एक एवी वस्तु छे के जे आपणने पूर्वपरिस्थिति-नुं भान करावे छे, ते विषयमां उंडा उतरनारा विद्वानोज साचुं ज्ञान करावी शके छे बाकी 'सूं अने ठमरी' जेवुं लखी आपनारा वैद्यो अने हलदरने गांठीए गांधी थई बेसनारा गांधीओ जेम उंटवैदुं करी साचा वैद्योनी प्रतिष्ठाने धक्को पहोंचाडे छे तेवीज रीते दंतकथाओंने इतिहासनुं रूप आपनारा अने इतिहास ए शब्द-नो पण पूरो अर्थ निहं जाणनारा इतिहासनुं ज्ञान आपवामां महा पंडिताई बतलाववानो डोळ करी साचा इतिहासनी, साचा इतिहास-ज्ञोनी अने सत्य वस्तुनी प्रतिष्ठा घटाडवा तेओ नीकळी पडे छे.

तेवा लेखो लखनारा पैकीनो एक लेख "जैन" पत्रना खास अंकमां प्रगट थयेलो ते वांचता तेना जवाबरूपे अमारा तरफयी प्रगट थयेल "अशोकना शिलालेखो उपर दृष्टिपात" ए नामना पुस्तक माटे केटलाक चिद्वानोए लखी मोकलेला अने केटलाक हिन्दी—गुजराती पेपरोमां प्रगट थएला अभिप्रायो वांची विचारी पोतानी भूलो स्वीकारशे एवी आशा राखी खरतानी जाण माटे प्रगट करवामां आवे छे. पुस्तकनी किंमत चार आना छे.

प्रकाशक---

पोताना संवत् १९२ ना अन्नाहना अंकमां नीचे मूजब लखे छः-अशोकना शिक्षालेखो उपर दृष्टिपात लेखकः-विद्या-वल्लभ इतिहासतत्त्वमहीद्धाक्ति श्रानार्क श्री विजयेन्द्रसूरि; प्रका-शकः श्री यशोविजय जैनमेन्यमाळा, भावनगर, इ. स. १९३६, किंमत चार आना.

आ नाना पुस्तकनुं एमां साची ऐतिहासिक दृष्टि होवाने लीघे, अमे घणुं मूल्य आंकीए छीए. वडोदराना डॉ. त्रिभुवनदास लहेरचंद शाहे ' प्राचीन भारतवर्ष ' नामनुं पुस्तक लख्युं छे, जेमां आ देशना प्राचीन इतिहासनी सर्वमान्य मान्यताओने छलप्रचुर दुलीलोथी उलटाववानो ग्लानिजनक प्रयास करवामां आव्यो छे. उपला पुस्तकना लेखक आचार्य विज**येन्द्रसूरिजी साचुं ज क**हे छे के " दाक्तरसाहेबनां जेवां पुस्तको बहार पाडवायी जैनोने लाम थवाने बदले ऊलटी हानि थवानो संभव छे " (जुओ ' किंचिद् वक्तव्य ' पृ. ३). मतलब के डा. त्रि**मुवनदास शाहनी** प्रवृत्ति इतिहासने तथा जैनोने हानिकारक ज छे.

डा. त्रिभुवनदास शाहनां ' प्राचीन भारत**वर्ष**' नामना पुस्तकनी समालोचना करवा माटे आचार्यश्रीए असल अने प्रमाणभूत ऐतिहासिक सामग्रीओ एकठी करवा गांडी हती, पण ए अरसामां 'जैन रौप्य महोत्सव अंक मां का बाहनो ज ' संप्रति महाराजना शिलालेखो किंवा पदच्युत अविक अधिक ' नामनो लेख तेओए जोयो अने तेनो ज प्रतिवाद

एमने इष्ट जणातां आ रुघु पुस्तक बहार पाड्युं. जो के डॉ. शाहना उपर्युक्त पुस्तकनी समालोचनानो प्रन्थ प्रगट करवानो एमनो विचार छे ज.

डा. शाहे अशोकना प्रसिद्ध शिलालेखोने संप्रति महा-राजाना ठराववा माटे जे खोटी अने श्रामक दलीलो करी छे तेनुं आ पुस्तकमां वीगतवार निरसन करवामां आव्युं छे. जेओने ऐतिहासिक विवेचनोनो अभ्यास नथी तेवां सामान्य माणसो ऐतिहासिक रूपनो आभास आपती तथा ऐतिहासिक विद्वानोनां नामोथी छेतरती वातोमांथी सत्यासत्यनो विवेक करवा असमर्थ होय छे. तेमां पण पोताना धर्मने के स्वधर्मना प्रभावक महा-पुरुषने महत्त्व मळतुं जुए त्यारे ए महत्त्व साचुं मळे छे के खो<u>दं</u> मळे छे ए जोवा जेटली सूक्ष्म दृष्टि वगरनां माणसो जरुर तणाइ जाय. आ स्थितिमां आचार्यश्रीनुं आ पुस्तक घणुं उपकारक छे. एमां डा. शाहना विधानोनुं पोकळपणुं बहु स्पष्ट रीते बताव्यं छे, अने साची ऐतिहासिक विचारणानी पद्धति पण रजू करी छे.

टूंकामां, आ पुस्तक प्रगट थवाथी अज्ञान लोकोमां ऐति-हासिक अमणा फेलाती अटकरो ए जोइने अमने हर्ष थाय छे. आ पुस्तकना लेखक जैनधर्मना प्रसिद्ध आचार्य होवाथी एमना लखाण उपर ए सांप्रदायिक द्वेषमूलक होवानी शंका उत्पन्न थवानुं कारण नथी. तेओ खरुं ज कहे छे, के "आजनां प्रकाशमय ऐतिहासिक क्षेत्रमां अंधकार मानी जनतानी आंखे पाटा बांध-

वानो अने बे विधर्मी राजाओना हेस्बोने पोताना धर्मना राजाना लेखो मनावी बीजानी संपत्ति स्वकीय संपत्ति मनाववानो दाक्तर साहेबे विचित्र प्रयत्न कर्यो छे " (पृ. ५९). अलबत्त, आचार्यश्री कहे छे तेम " तेमनी मुराद पार पडी नथी एम तो जरुर कही शकाय अने एटलुं आपणुं सद्भाग्य छे एमां शंका नथी. " खरी वात छे के जैनसमाजमां आवा साचा इतिहास-हृदयकोविद आचार्य जागृत छे ए जैनसमाजनुं ज नहि पण गुज-रातनं सद्भाग्य छे, एम आ स्तुत्य अने अंतरना इतिइासप्रेमथी प्रेरित प्रयासने जोइने कह्या वगर रही शकता नथी.

दुर्गाञ्चंकर के. शास्त्री.

साहित्यकार—

वडोदरा साहित्य सभा तरफथी प्रगट थतुं त्रेमासिक सन् १९३६ ना सप्टेम्बरमां लखे छे के:---

लेखके आ नानुं पुस्तक डॉ. त्रिभुवनदास शाहना चंद्रगुप्त, अशोक, प्रियदर्शी, महाराजा संप्रति, वगेरे राज्यकर्ताओना अमल विषे दर्शावेला विचारोनुं निरसन करवा माटे तैयार कर्युं छे अने तेम करतां तेमणे ते समयनी केटलीएक ऐतिहासिक हकीकतोनुं सारुं समर्थन कर्युं छे. आ नानुं पुस्तक छेसकनी प्रवृत्तिना प्रथम प्रयासरूपे छे. ते मोटा प्रयासने तेओ तुरत प्रकाशित करे तेवुं अमे इच्छीए छीए.

प्रॉफेसर केशवलाल हिंमतलाल कामदार एम. ए.

समयधर्म—

सोनगढथी प्रगट थतुं पाक्षिक तः. २६-७-३६ ना अंकमां लखे छे के:—

श्रीविजयेन्द्रसूरिजीए रुखेल 'अशोकना शिलालेख उपर दृष्टिपात ' नामनुं पुस्तक अमोने मल्युं छे. आ पुस्तकमां अशोकना शिलालेखो संबंधी सारो प्रकाश पाडवामां आव्यो छे. श्रीमान् डॉ. त्रिभोवनदास रुहेरचंद शाहे अशोकना शिलालेखोने संप्रति राजाना शिलालेखो कह्या छे ते संबंधी स्फोट दाखला दलीलो साथे करी श्री विजयेन्द्रसूरिजीए साबित करी आप्युं छे के ते िशिलालेखोने डा. संप्रतिराजाना शिलालेख कहे छे ए वात गलित छे. आ पुस्तक भूत इतिहास उपर सारो प्रकाश पाडे छे.

गुजराती--

मुंबइथी प्रकाशित थतुं अठवाडिक सन् १९३६. ऑक्टोबर ता. ४ थी ना अंक्रमां लखे हे के:---

्ञा नानकडा ग्रंथमां डॉ. त्रिभुवनदासं रू. शाहे प्रकट करेला प्राचीन भारतवर्ष भाग पहेलानुं खंडन छे. लेखक पण समर्थ इतिहासवेत्ता अने विचारक जणाय छे. तेमणे डॉ. शाह क्यां क्यां अनुमानो करवामां भींत भूल्या छे ते विगतवार दर्शान्युं छे. तेओ जणावे छे के अशोक महाराजा जैन नहिं पण बौद्धधर्मी हता. तेना शिलालेखोमां जे प्रियदर्शिन ,राजानुं नाम आवे छे ते महाराजा अशोकनं ज छे. सेन्डोकोटस तेज चंद्रगुप्त छे. तेओ जणावे छे के डा. शाहने संस्कृत भाषानुं सादा के उंचा व्याक-रणमु अंद्व व्युत्पत्तिपूर्वके ज्ञान न होवार्थी भळती शब्द साम्यता

ज्यां त्यां जोई, खोटां अनुमानो काढवामां दोरवाई गया छे, जे भयंकर छे, अने जैनधर्मनी महत्ता खोटी रीते गाई छे. आ पुस्तिकाना लेखक जणावे छे के डॉक्टर साहेबना पुस्तको बहार पडवाथी जैनोने लाभ थवाने बदले हानि थवानो संभव वधारे छे. आ तेमनो मत जराक उतावळे लागे छे. छतां दलीलो तो बहु मजबूत रज़ करी छे. पण हजी तो तेमणे एकज पुस्तक जोयुं छे. डा. शाहना चारे चार भागो प्रकट थाय नहिं त्यांसुधी एकदम चोकस अभिपाय बांधवो मुश्केल छे. कारण के केटलाक सवालो लेखके पूछ्या छे तेना खुलासा बीजा त्रीजा के चोथा भागमां कदाच आवी पण जाय. छतां पण श्री विजयेन्द्रसूरिजीए केटलाक मुद्दाओं एवा जणाव्या छे के ते रा. डॉ. शाहनी दलीलो पहेलेथी कापी नांखे छे. दा. त. चन्द्रगुप्त अने सेन्डोकोटस एक छे. प्रियदर्शिन ए अशोकनं विरुद हतुं, तथा अशोकना खडक लेखोमां जे सात धर्मग्रन्थोनां नामो आवे छे ते सर्व बौद्धधर्मने लगता छे: एम श्री विजयेन्द्रसूरिजीए निःसंदग्ध रीते पूरवार कर्युं छे; एटले बीजा भागनो घणो मोटो भाग आथी नकामो थइ जाय छे. आ सात बौद्ध धर्मना ग्रंथोनां नामोज एकलां पुरवार करवाने बस छे के शिलालेखो अशोकनांज छे, प्रियदर्शिनना न**थी,** अ**ने** प्रिय-दर्शिन ए नाम अशोकनं बिरुद् छे. शिलालेसमां अशोक एवं नाम आवतं नथी; एटले प्रियदर्शिन पण जैन नहिं पण बौद्धज होवो जोइए एम जणाय छे.

आ विषय अटपटो अने गुंचवणीमर्यो छे. एटले तेना उपर रागद्वेष वगर जेटली चर्चा थरो तेटली उपकार के

आत्मानंद प्रकाश—

भावनगरथी प्रगट थतुं पुस्तक ३४ अंक बीजामां लखे छे के:—

डा. त्रिभुवनदास रुहेरचंद पासेथी मळेला Incriptions of Ashoka अने संप्रति महाराजना शिलालेखो किंवा पदच्युत सम्राट अशोकना लेख उपरथी लेखक महापुरुषे अनेक प्रंथोना आधार अने पोते ज जैन इतिहासना प्रखर विद्वान अने संशोधक होवाथी पोताना अनुभवथी आ रुघु प्रंथ अनेक प्रमाणो आपी ल्रुच्यो छे. इतिहास माटे गमे ते माणस गमे तेवो अभिप्राय आपी न ज शके, परंतु तेनो ब्होळो अभ्यास, शहादतो, शास्त्रीय अनेक प्रमाणोथी ज ते वस्तु सिद्ध थइ शके. आचार्य महाराजे तेवा ज यथायोग्य प्रमाणो आपी अशोकना शिलालेखो माटे आ प्रथमां लस्त्यं छे. एओश्रीना आवा ऐतिहासिक लेखो सत्य अने प्रमाण-भूत ज होय छे.

> X X X

पुस्तकालय —

१९३६ ना'सप्टेम्बरमां लखे छे के-

डॉ. त्रिभोवनदास लहेरचंद शाहना लेखो तथा 'प्राचीन भारत ' मांना केटलाक विचारोनं निरसन करवाना हेतुथी विद्वान मुनिश्रीए आ लेख बहार पाड्यो छे. दाखला दलीलो तथा ऐति-हासिक आधारो साथे पोतानुं मंतव्य लेखके बुद्धिपूर्वक सिद्ध करी बताव्युं छे. ' संप्रति महाराजना शिलालेसो किंवा पदच्युत सम्राट अशोक ' ए शीर्षकवाळो, डॉ. शाहनो हेल जैन रौप्य-

महोत्सव अंक ' मां प्रसिद्ध थयो छे. तेना तथा तेना समर्थनरूप ' प्राचीन भारत ' भा. १ लानां एमना दृष्टिबिन्दुओना प्रतिवाद रूपे आ लेख प्रमाण सह सिद्ध करी बताव्यो छे. ऐतिहासिको तथा जैनधर्मीओ तेमज मागधीय साहित्यना अभ्यासकोने आ लेख बहुज रसमय, उपयोगी तेमज सप्रमाण जणाहो.

पन्नो.

अशोकना शिलालेख उपर दृष्टिपात ए नामनुं पुस्तक मळ्युं ते माटे बहु आभारी छुं. टूंकामां मुहासर चर्चा सारी करी छे. हुं कालेने काले ज एकज बेठके वांची गयो. मारी आंखे बहु झांख पड़े छे तेथी घणुं खरुं हुं नवुं छपातुं साहित्य वांचतो नथी. परंतु आपना लघु लेखमां मने एटलो रस पड्यो के आंख संचीने पण में ते पूरो कर्यो अने आभार साथे जणावुं छुं के केटळंक जाणवानं पण मळ्यं. सेवा फरमावशो.

> केशवलाल हर्षदराय ध्रव. अमदावाद, ता. २७-६-३६.

वि. आपना तरफथी ' दृष्टिपात ' नुं निष्पक्षपात तथा शासीयदृष्टिए विचारेलुं अशोकना शिलालेखो संबंधीनं ऐतिहासिक अन्वेषण मळ्ये लगभग महीनो थइ गयो.

आपना विहार ए ज्ञानगोचरीरूपे थाय छे; अने तेना प्रत्यक्ष फलरूपे सांप्रदायिक तथा सरस्ततीनी सेवा थती रहे छे, ए जोइ कोने आनंद न थाय ?

> मंजुलाल र. मजमुदार. प्राच्यविद्यामंदिर, वडोइरा ता. ११-८-३६.

" अशोकना शिलालेखो उपर दृष्टिपात " ए पुस्तकमां आपे दर्शावेली शास्त्रीय समदृष्टि जोइ आ पत्र लखवा प्रेराउं छुं. आपे जे डा. शाहना लेखना निरसन माटे आ पुस्तक लख्युं छे तेमणे ज हमणां 'प्राचीन भारतवर्ष भाग बीजो ' एवं पुस्तक बहार पाड्युं छे. आ पुस्तकनी समालोचना आप प्रस्थान मासिक माटे लखी आपशों तो आभारी थइश. आप प्रस्थानमां बे के त्रण पानां जेटली समालोचना आपजो तो बस थजो.

मासिकमां एथी वधारे अवकाश मळी शकतो नथी. उत्तर आपवा कृपा करशो.

रामनारायण वि. पाठक.

तंत्री प्रस्थान मुंबइ, ता १८-८-३६.

आपे दाखला दलीलो साथे जे विचारो दर्शाव्या ते साथे हं पूर्ण रीते मळतो छुं. अशोकने बदले संप्रति महाराजने ठोकी क्साडवाने जे प्रयत्न थयो छे ते मने तो हास्यस्पद लागे छे.

> गोविंदभाइ हाथीभाइ देसाइ. वडोदरा. ता. १८-७-३६.

आपे मोकलेल पुस्तक 'अशोकना शिलालेखो उपर दृष्टिपात'नी बंने नकहो पहोंची गइ छे.

.....एमणे (डा० शाहे.) पुस्तक छपाया पूर्वे तेनी रूपरेखानां विज्ञापनो मोकस्यां हतां जे वांचीने तेमने तेमांथी केटलीये मूलो बतावी हती अने तेवी मूलो सुधारशो तो पुस्तक उपयोगी थइ शकरो,......,, डॉ० शाहे म्हारा पत्रनो मात्र एक ज फकरो 'पुस्तक उपयोगी थरो ' ए लइ लीघो अने बीजी बाबतो दबावी राखी, ज्यारे तेमनी ए नीतिनी म्हने खबर पडी तो तेमने लखी जणाव्युं के या तो म्हारा पूरेपूरा विचारो बाहर मुको नहिंतर आ छापेल फकरो पण काढी नाखो, ज्यारे ए विषयमां २–३ पत्रो आघां पाछां थया त्यारे तेओ म्हारा वचनवाळां पांच हजार हेंडबीलो रद करवा अथवा म्हारा विचारोनी फुटनोटमां नोंध लेवा जणाव्यं, म्हें नोंध लेवानी वात मंजूर राखी, पण तेमणे तेवी नोंध लीधी छे के नहिं ते हुं जाणतो नथी, केमके म्हें एमनुं एक पण पुस्तक मंगावेल नथी अने आवा गांडपण भरेला पुरतकोने मंगाववानी इच्छा पण नथी हुं आवी बाबतोने चर्चीने तेने महत्त्व आपवा जेवी प्रवृत्ति कर-वाने राजी पण नथी.

आपे जे वातो एमना विचारोना खंडनार्थे लखी छे ते योग्य छे एमां तो कंइ पण वांधा जेवं नथी ज.

> मुनिकल्याणविजय. ता. २२-७-३६. मु० वासा पो॰ रोहिंडा, (आबूरोड)

भावनगर स्टेट बारटन ल यबेरी अने म्युझियमना ऑक्टिसेकेटरी तथा आल्फ्रेड हाइस्कूलना हेडमास्तर लखी जणावे छे के:---

श्री वीर विहार मीमांसा तथा अशोकना विकेरिकेश उपर इष्टिपात मने मळ्यां छे. आ भेटने माटे हुं आपनी अपि विवेदातीनी आभारी छुं. आचार्य श्री विजयेन्द्रसूरिए आ बन्ने पुस्तको तैयार करवामां घणो श्रम लीघो होय तेम जणाय छे. पूरा-तत्त्वना अभ्यासीओने ए पुस्तको बहु उपयोगी नीवडशे एम हुं मानुं छुं.

विञ्चलदास स्वीमचंद पटेल

ं**वीर** ता. १५ अगस्त १९३६ एटा.

इतिहास का खून.

बड़ौदा की शशिकांत कं० ने एक बृहत् पुस्तक 'प्राचीन भारत वर्ष ' के नाम से गुजराती में प्रगट की है। उसके लेखक डॉ॰ त्रिभुवनलाल शाह नामक कोई जैन महानुभाव हैं। पुस्तक लिखने में उन्होंने काफी श्रम उठाया है। परंतु साथ ही अपने मन के लड्डुओं को भी उस में खूब फोड़ा है ! पुस्तक गुजराती में है और हमने देखी मी नहीं है, परंतु हमारे जिन विद्वान मित्र ने उसे देखा है और उसके विषय में जो कुछ उन्हों ने लिखा है उससे पगट है कि पुस्तक में बेददीं से जान बूझ कर इतिहास का खून किया गया है। हर कोई जानता है दक्षिण भारत की विशालकाय गोम्मट मूर्तियां नम्र और दिग० जैनाम्नाय की हैं। उन्हें वीरवर चामुण्डराय, तिम्मरामादि नरपुक्रवीं ने स्थापित कराया था। किंतु हमारे मित्र लिखते हैं कि उन्हें डा० सा० सम्राट सम्प्रति की निर्माण की हुई बताते हैं। और उनका

जो चित्र दिया है उसमें नम्रता को आच्छादित कर दिया है। यह अति साहस है और इसका परिणाम बहुत बुरा हो सकता है। ऐसी उच्छृङ्खरू रचनाओं का जोरदार खण्डन होना आव-**इयक है । जैन संस्थाओं को चाहिये कि उक्त पुस्तक की ठीकर** आलोचना सुयोग्य विद्वानों से कराके जैन पत्रों में प्रकाशित कर दें। जिससे जैन धर्म का अनिष्ट न हो। हमें यह जानकर हर्ष है कि श्री इतिहास तत्त्व महोदिष विजयइन्द्रसूरिजी इस पुस्तक पर एक आलोचनात्मक लेख प्रकट करने वाले हैं। दिग० जैन विद्वानों को भी उनका अनुकरण करना चाहिये।

का० प्र०

वीरसंदेश २५ ओगस्ट १९३६ आगरा.

कुछ समय हुआ भावनगर के 'जैन' पत्र की सिरुवर जुबली विशेषांक में डा० त्रिभवनदास शाह का एक लेख अशोक के विषय में प्रगट हुआ था, जिस में उन्हों ने अशोक के धर्म लेखों को जैन सम्राट् सम्प्रति का बताया था। प्रस्तुत पुस्तक में उपरोक्त सुरिजी म० ने उनके लेख का खण्डन किया है और सिद्ध कर दिया है कि वे लेख सम्प्रति के नहीं हैं। आपकी शैली गृद, निष्पक्ष और गवेषणात्मक है।

पन्नो.

मैंने आपका " अशोकना शिलालेखों उपर दृष्टिपात " आद्योपान्त पढ़ा। यह वस्तुतः आनन्द का विषय है कि एक जैन आचार्य मिथ्यारूपसे जैन धर्म का गौरव बढाने का प्रयत्न करनेवालों की चेष्टाओं का नियाहण करे । आपकी युक्तियां अकाट्य है। उन्हें पढ़नेपर श्रीयुत शाहका कथन निःसार प्रतीत होता है। आपके प्रश्न भी बहुत मार्के के हैं। यदि शाह महोदय निष्पक्षरूपसे उनका उत्तर ढूंढने का प्रयत्न करेंगे (मेरे समजमें उत्तर देना तो असंभव है) तो उनकी सम्राट् अशोक तथा प्रातःस्मरणीय महाराजाधिराज संप्रति के विषय में भ्रान्तिपूर्ण धारणाए सहज ही नष्ट हो जायगी।

> दशरथ शर्मा. एम. ए. बीकानेर.

आपकी भेजी हुई सुंदर पुस्तिकाएं भी मीलीं । कोटिशः धन्यवाद । श्रीसूरीश्वरजी महाराज का पत्र वांचकर बड़ा आनंद मिला उनकी स्मृति ताजी हो आई। वह जब आलीगंज आये थे तब में स्कूलका छात्र था किन्तु उनके साथका बह दो दीन अब भी मेरे हृदयपट पर सजीव है धन्य थे वह । उनकी रचनायें भी उनके कार्योंकी तरह महत्त्वशाळी है। आपके निबंध तो मैं पहले पढ़ चूका हूं, परंतु आपने जिस निष्पक्ष और गवेषणात्मक रीतीसे मगवान महावीर के विहार और अशोकके धर्मलेखों पर विवेचना की है वह मूल्य मई है। अशोक के विषय में आपका लेख पुष्ट और जोरदार है। खेद है कि डा. शाह के आधार से मैंने अपने एक निबंध में कइ एसे शब्द जैन पारिभाषिक शब्दरूप में दीये हैं जो अन्यत्र भी मिलते है। यदि संभव हुआ तो उन्हें अब मैं निकाल दउंगा। यदि जरा पहले आपका निबंध मिलता तो सुगमता से यह सुधार हो जाता। खेर अभी प्रयत्न करंगा।

कामताप्रमाद जैन एम. आर. ए. एस. आ. एडीटर वीर.

आपकी भेजी हुई आलोचना पुस्तिका मीली। धन्यवाद ! डा. शाह के संप्रति या अशोकवाले लेखकी संक्षेप में इस में बड़ी सुंदरता के साथ आलोचना की है। यह छोटी होते हुए भी बडी सचोट और अध्ययनपूर्ण आलोचना की है। अवसर पाकर इस समालोचना को भी उत्तर स्वरूप में हिन्दी पत्रो में दउंगा।

भारती भ वन, उज्जैन,

सूर्यनारायण व्यास.

"अशोकना शिलालेखो उपर दृष्टिपात" नामकी पुस्तिका मील गई थी में दो तीन महीने से बिमार होने के कारण आपकी सेवा में पत्र नहीं लीख सका हूं। इस अविनय के लीए आप क्षमा करे। डा. त्रीभोवनदास के विचारों की आपने बड़ी मार्मिकता से और बहुश्रुतता से समालोचना की हैं। आपने इस पुस्तिका मेजने के लिये सेवक का नाम याद किया इस लिये आपका आभारी हूं।

पाटण, सागरनी उपाश्रय,

विद्वद्वर्य पुण्यविजय

नम्र सूचना—

आ अभिप्रायोवाळुं ट्रेकट प्रेसमां जतां अमारी नजर दाक्तर त्रिभुवदास. ले०ना " गुजराती " मां आवेला जवाब तरफ गइ छे. तेमां तेओए जे कांइ रुख्युं छे तेनां जवाब माटे अमोए आचार्यश्री विजयेन्द्रसूरिजी महाराजनुं ध्यान खेंचेल छे अने तेनी पोकलता पण समये बहार पडशे एम आशा राखीये छीए.

अने ''जैन'' पेपरमां आचार्य महाराजश्रीए पूछेला प्रश्नोनां जवाब आपवामां जे वकता डाक्टर साहेबे करी छे अने पोते तेमां केवा बंधाया छे तेनो पण जवाब बहार पडशे त्यारे विद्वत समाज डॉक्टर साहेबनुं इतिहासमां केटलुं ज्ञान छे ते वधारे समजरो.

अमोने लागे छे के दाक्तर साहेबने इतिहासनी स्पष्ट वस्तु बहार आवे तेमां थतां खर्चनी बहु फिकर रहे छे. त्यारे डॉक्टर साहेबे जे लख्युं छे ते तेमने तेम जळवाइ रहे तो वधारे सारुं एम दाक्तर साहेबनी जो खरेखर मान्यता होय तो पछी ए स्वयंभित्ति पोतानी नवळाइ आडकतरी रीते जाहेर प्रदर्शित थइ आवे छे. माटे दाक्तर साहेबने विनंती छे के आपे सत्यवस्तु जाहेर थाय ते माटे थता खर्चना पैसानी बहु फिकर न करवी जोइए. प्रकाशक.

मुद्रकः-शा. गुलाबचंद लल्लुभाई, श्री महोदय प्री. प्रेस-भावनगर.

